

14-आद्यशक्ति गायत्री की समर्थ साधना

अध्याय 1: आद्यशक्ति गायत्री की समर्थ साधना

प्रश्न 1: गायत्री महामंत्र को भारतीय संस्कृति का सार-तत्त्व क्यों कहा गया है?

उत्तर: गायत्री महामंत्र को भारतीय संस्कृति का सार-तत्त्व इसलिए कहा गया है क्योंकि इसमें भारतीय संस्कृति के सभी बहुमूल्य निर्धारणों, प्रतिपादनों और अनुशासनों का सार पाया जा सकता है। यह चौबीस अक्षरों का सबसे छोटा धर्मशास्त्र है, जिसमें चारों वेदों का सार समाहित है। प्राचीन काल में इसी मंत्र के ज्ञान ने भारत को 'स्वर्गादपि गरीयसी' (स्वर्ग से भी महान) बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

प्रश्न 2: गायत्री मंत्र का जाप मात्र कर लेना ही पर्याप्त क्यों नहीं है?

उत्तर: केवल गायत्री मंत्र के अक्षरों को दोहराना पर्याप्त नहीं है क्योंकि इससे व्यक्ति की प्रगति नहीं होती, जैसे स्कूली बच्चे सिर्फ वर्णमाला दोहराने से आगे नहीं बढ़ते। मंत्र की शक्तियों और विशेषताओं को प्राप्त करने के लिए उसमें निहित तत्त्वज्ञान पर गहराई से विचार करना, उसे हृदय में उतारना और अपने जीवन में शामिल करना आवश्यक है, ताकि जीवन परिष्कृत हो सके।

अध्याय 2: गायत्री और सावित्री का उद्भव

प्रश्न 1: गायत्री और सावित्री का उद्भव कैसे हुआ?

उत्तर: पौराणिक कथा के अनुसार, सृष्टि के आरंभ में जब ब्रह्माजी कमल पर प्रकट हुए, तो उन्हें आकाशवाणी द्वारा गायत्री मंत्र के माध्यम से तप करने का निर्देश मिला। तप की पूर्णता पर गायत्री दो खंडों में प्रकट हुई। एक को गायत्री कहा गया, जो तत्त्वज्ञान से संबंधित है, और दूसरे को सावित्री कहा गया, जो भौतिक विज्ञान और पदार्थों के सदुपयोग से संबंधित है।

प्रश्न 2: गायत्री और सावित्री में क्या अंतर है?

उत्तर: गायत्री का संबंध तत्त्वज्ञान, आस्था, आकांक्षा और क्रियाशीलता जैसी चेतन शक्तियों से है, जो मनुष्य के चिंतन, चरित्र और व्यवहार को प्रभावित करती है। वहीं, सावित्री का संबंध भौतिक विज्ञान, पदार्थों की संरचना और उनके सदुपयोग से है। इन दोनों के समन्वय से ही मनुष्य का समग्र विकास संभव है।

अध्याय 3: त्रिपदा गायत्री—तीन धाराओं का संगम

प्रश्न 1: गायत्री को 'त्रिपदा' क्यों कहा जाता है? इसके तीन चरण क्या हैं?

उत्तर: गायत्री को 'त्रिपदा' कहा जाता है क्योंकि इसके तीन चरण हैं और यह तीन दिशा-धाराओं का संगम है। इसके तीन चरण हैं:

1. सविता के तेजस् का वरण: जीवन में ऊर्जा, शौर्य और साहस को अपनाना।
2. देवत्व का वरण: उदारता और शालीनता जैसे दैवीय गुणों को धारण करना।
3. सामूहिक सद्बुद्धि की प्रेरणा: केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि पूरे समाज और संसार के लिए सद्बुद्धि की कामना करना।

प्रश्न 2: गायत्री के तीनों चरणों को अपनाने वाले व्यक्ति में कौन-सी विशेषताएँ होनी चाहिए?

उत्तर: गायत्री के तीनों चरणों को अपनाने वाले व्यक्ति में तीन मुख्य विशेषताएँ होनी चाहिए। पहला, वह

अनीति के आगे न झुकने वाला साहसी हो। दूसरा, वह लेने की अपेक्षा देने की प्रवृत्ति वाला उदार और शालीन हो। तीसरा, वह संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊपर उठकर सामूहिक कल्याण की भावना रखने वाला हो।

अध्याय 4: शक्ति केन्द्रों का उद्दीपन—शब्द शक्ति

प्रश्न 1: गायत्री मंत्र के अक्षरों का शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: गायत्री मंत्र के अक्षरों का उच्चारण करने से मुख, तालु और कंठ के विभिन्न स्थानों पर दबाव पड़ता है। यह दबाव सूक्ष्म-शरीर में स्थित विभिन्न शक्ति-केंद्रों, जैसे षट्चक्र और ग्रंथियों को जाग्रत करता है, जैसे टाइपराइटर की कुंजी दबाने पर अक्षर छपता है। इससे शरीर में मौजूद दिव्य शक्तियाँ जाग्रत होती हैं और साधक को विशेष लाभ मिलता है।

अध्याय 5: शरीर की विभिन्न देव-शक्तियों का जागरण

प्रश्न 1: गायत्री मंत्र साधना से शरीर में देव-शक्तियाँ कैसे जाग्रत होती हैं?

उत्तर: मनुष्य का शरीर एक दिव्य मंदिर की तरह है, जिसमें विभिन्न देवता सुप्त अवस्था में रहते हैं। गायत्री मंत्र साधना इन सोई हुई देव-शक्तियों को जगाने का कार्य करती है। मंत्र के प्रभाव से एक साधारण व्यक्ति भी जाग्रत, सजीव और सशक्त बन जाता है। इस प्रक्रिया से ओजस्, तेजस् और वर्चस् जैसी शक्तियाँ उभरती हैं, जिसे मंत्र की सिद्धि कहा जा सकता है।

अध्याय 6: यज्ञोपवीत के रूप में गायत्री की अवधारणा

प्रश्न 1: यज्ञोपवीत (जनेऊ) क्या है और इसके नौ धागों का क्या महत्व है?

उत्तर: यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करना द्विजत्व या मानवीय गरिमा के अनुरूप जीवन को परिष्कृत करने का प्रतीक है। इसमें नौ धागे होते हैं, जो नौ मानवीय सद्गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन नौ सद्गुणों को जीवन में धारण करने और उन्हें लगातार उन्नत बनाने की प्रेरणा देने के लिए ही यज्ञोपवीत को कंधे पर धारण किया जाता है।

अध्याय 7: नौ सद्गुणों की अभिवृद्धि ही गायत्री-सिद्धि

प्रश्न 1: यज्ञोपवीत से जुड़े नौ सद्गुण कौन-से हैं?

उत्तर: यज्ञोपवीत से जुड़े नौ सद्गुण हैं: (१) श्रमशीलता, (२) शिष्टता, (३) मितव्ययिता (सादगी), (४) सुव्यवस्था, (५) उदार सहकारिता, (६) समझदारी, (७) ईमानदारी, (८) जिम्मेदारी, और (९) बहादुरी (साहसिकता)। इन नौ गुणों का विकास ही सच्ची गायत्री-सिद्धि है।

अध्याय 8: गायत्री का तत्त्वदर्शन और भौतिक उपलब्धियाँ

प्रश्न 1: गायत्री उपासना के दो प्रमुख आत्मिक लाभ क्या हैं?

उत्तर: गायत्री उपासना के दो प्रमुख आत्मिक लाभ स्वर्ग और मुक्ति (मोक्ष) हैं। स्वर्ग का अर्थ है एक श्रेष्ठ मनःस्थिति और अपने आसपास स्वर्गीय वातावरण बना लेना। मुक्ति का अर्थ है दोष-दुर्गुणों, मोह और सांसारिक बंधनों से छुटकारा पाना। यह दोनों लाभ साधक को जीवनकाल में ही अनुभव होने लगते हैं।

अध्याय 9: चौबीस अक्षरों का शक्तिपुञ्ज

प्रश्न 1: गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों का प्रतीकात्मक महत्व क्या है?

उत्तर: गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षर अत्यंत शक्तिशाली हैं। पुराणों में वर्णित भगवान के चौबीस अवतार, चौबीस प्रमुख ऋषि, और चौबीस देवियाँ इन्हीं अक्षरों के प्रतीक माने गए हैं। महर्षि दत्तात्रेय के चौबीस गुरु भी प्रकारांतर से गायत्री के चौबीस अक्षर ही हैं। यह अक्षर अष्ट सिद्धियों और नौ ऋद्धियों का आधार भी हैं।

अध्याय 10: शिखा-सूत्र और गायत्री मंत्र सभी के लिए

प्रश्न 1: क्या गायत्री मंत्र केवल कुछ विशेष लोगों के लिए है?

उत्तर: नहीं, यह धारणा गलत है कि गायत्री मंत्र केवल ब्राह्मणों या पुरुषों के लिए है। गायत्री स्वयं मातृरूपा हैं, इसलिए उनकी उपासना से स्त्रियों को वंचित नहीं किया जा सकता। युग निर्माण योजना ने इन रूढ़िवादी प्रतिबंधों को समाप्त कर गायत्री उपासना को बिना किसी भेदभाव के सभी नर-नारियों के लिए सुलभ बना दिया है।

अध्याय 11: यज्ञ और गायत्री एक दूसरे के पूरक

प्रश्न 1: गायत्री और यज्ञ का क्या संबंध है?

उत्तर: गायत्री और यज्ञ एक-दूसरे के पूरक हैं और इन्हें भारतीय संस्कृति का जनक-जननी (माता-पिता) माना जाता है। यज्ञ को परब्रह्म का प्रत्यक्ष मुख कहा गया है। गायत्री मंत्र की शक्ति यज्ञ-ऊर्जा के साथ जुड़कर कई गुना बढ़ जाती है, जैसे लाउडस्पीकर से आवाज दूर तक फैलती है। यज्ञ शारीरिक और मानसिक रोगों के निवारण में भी सहायक है।

अध्याय 12: एक आध्यात्मिक प्रयोग

प्रश्न 1: दीपयज्ञ क्या है और इसका क्या महत्व है?

उत्तर: दीपयज्ञ, गायत्री यज्ञ का एक छोटा और सरल स्वरूप है, जिसे वर्तमान समय की व्यस्तता और महंगाई को देखते हुए प्रचलित किया गया है। जैसे एक छोटी चिंगारी में आग लगाने की क्षमता होती है, वैसे ही छोटे आकार का होने पर भी दीपयज्ञ अत्यंत प्रभावशाली होता है और व्यापक क्षेत्र को प्रभावित करता है। इसका उद्देश्य विचारक्रांति के माध्यम से नवयुग का वातावरण तैयार करना है।

अध्याय 13: आत्मशोधन, साधना का एक अनिवार्य चरण

प्रश्न 1: गायत्री साधना में आत्मशोधन क्यों आवश्यक है?

उत्तर: आत्मशोधन, यानी अपने व्यक्तित्व को शुद्ध और परिष्कृत करना, गायत्री साधना का पहला और अनिवार्य चरण है। जिस तरह ऑपरेशन से पहले औजारों को शुद्ध किया जाता है, उसी तरह उपासना से पहले साधक का जीवन उच्च कोटि का होना चाहिए। घिनौने और कुकर्मी व्यक्ति की पूजा-पाठ का कोई फल नहीं मिलता, क्योंकि दैवी कृपा पवित्र व्यक्तित्व पर ही बरसती है।

अध्याय 14: उपासना—विधान और तत्त्वदर्शन

प्रश्न 1: गायत्री उपासना की सामान्य विधि और ध्यान की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर: गायत्री उपासना में ॐकार और व्याहृतियों ('भूर्भुवः स्वः') के साथ त्रिपदा गायत्री का शांत मन से जप किया जाता है। जप के साथ प्रातःकाल के उगते हुए स्वर्णिम सूर्य (सविता) का ध्यान किया जाता है। साधक यह भावना करता है कि सूर्य की किरणें शरीर में ओजस्, मन में तेजस् और अंतःकरण में वर्चस् की स्थापना कर रही हैं।

अध्याय 15: युगतीर्थ में साधना का विशेष महत्त्व

प्रश्न 1: शांतिकुंज में गायत्री साधना का विशेष महत्त्व क्यों है?

उत्तर: शांतिकुंज एक सिद्ध तपस्थली है, जिसे युगतीर्थ भी कहा जाता है। यह ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की तपस्थली रही है और यहाँ करोड़ों गायत्री मंत्र जप और अनुष्ठान संपन्न हो चुके हैं। इस पवित्र स्थान के संस्कारित वातावरण में साधना करने से साधक को मनोबल और आत्मबल की प्राप्ति होती है, जो उसकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहायक होता है।

अध्याय 16: संस्कारों की सुलभ व्यवस्था

प्रश्न 1: शांतिकुंज में कौन-से संस्कार आसानी से कराए जा सकते हैं और क्यों?

उत्तर: शांतिकुंज में यज्ञोपवीत (जनेऊ) संस्कार और विवाह संस्कार बहुत ही सुलभ और बिना किसी आडम्बर या खर्चे के कराए जाते हैं। आज के समय में खर्चीली शादियाँ लोगों को दरिद्र और बेईमान बना रही हैं। शांतिकुंज में बिना दहेज और जेवर के विवाह संपन्न होते हैं, जिससे यह स्थान ऐसे संस्कारों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त माना जाता है।